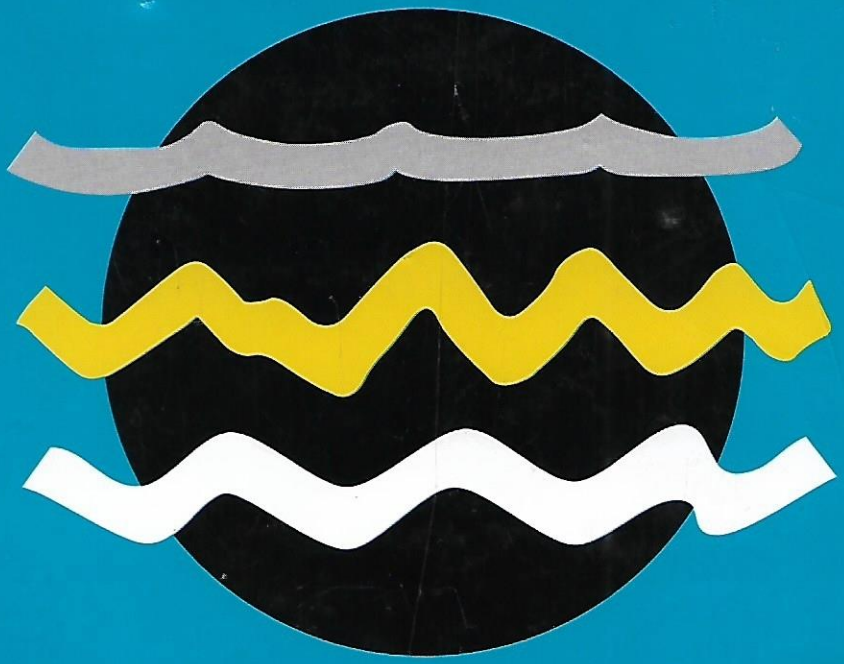

चरकसंहिता

डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

।। श्रीः ।।

चौखम्बा आयुर्विज्ञान ग्रन्थमाला

११

महर्षिपुनर्वसु-आत्रेयोपदिष्टा श्रीमदग्निवेशप्रणीता

चरक-दृढबलप्रतिसंस्कृता

चरकसंहिता

परिशिष्टाद्यलंकृतविशेषवक्तव्यादिसमन्वित-

'चरकचन्द्रिका' हिन्दीव्याख्याविभूषिता

(उत्तरार्द्ध * चिकित्साकल्पसिद्धिस्थानात्मकः)

व्याख्याकार:

डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

साहित्य-आयुर्वेद-आचार्य

एम० ए०, पी-एच. डी०, डी० एस-सी० ए०

प्राक्कथन-लेखक:

डॉ० प्रभाकर जनार्दन देशपाण्डे

ए० एम० एस० (का० हि० वि० वि०)

जेड० ए० एण्ड टी० एच० एस० सी० एस० आर० (वियना);

एफ० आई० ए० पी०, डी० आई० बी० पी० (अमेरिका);

एफ० आर० ए० एस० (लन्दन); एफ० आई० पी० एम० (जापान)

University Department of Yoga RU

No/PGDY/ 192

Library

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

चरकसंहिता-विषयानुक्रमणिका

चिकित्सास्थान

विषय	पृष्ठ
(१।१) रसायनाध्याय : प्रथमपाद	**१-२७**
सामान्य भेषज-प्रकरण	
भेषज के पर्याय	२
भेषज के दो भेद	३
अभेषज के दो भेद	४
वाजीकरण-रसायन	,,
रसायन-सेवन से लाभ	५
रसायन की निरुक्ति	६
वाजीकरण की निरुक्ति	७
रसायन-वाजीकरण का प्रारूप	८
अभेषज का निषेध	,,
द्विविध रसायन-प्रकरण	
दो प्रकार के रसायन	९
कुटी-निर्माण की विधि	१०
कुटी-प्रवेश की विधि	११
रसायन के पूर्व संशोधन	१२
संशोधन औषधद्रव्य	,,
हरीतकी का परिचय एवं गुण	१३
हरीतकी-सेवन के अयोग्य व्यक्ति	१५
आँवला के गुण-कर्म	,,
उपसंहार	१६
हिमालय की ओषधियाँ उत्तम	,,
प्रथम ब्राह्मरसायन	१७
द्वितीय ब्राह्मरसायन	१९
ब्राह्मरसायन की फलश्रुति	२०
च्यवनप्राशरसायन	२१
च्यवनप्राश की फलश्रुति	२२
आमलकरसायन	२३
पञ्चम हरीतक्यादि रसायन	२४
हरीतक्यादि योग	२५
रसायन का महत्त्व	२६
उपसंहार	२७
(१।२) रसायनाध्याय : द्वितीयपाद	**२७-४२**
रसायन-सेवन से लाभ	२८

विषय	पृष्ठ
ग्राम्य आहार से हानियाँ	२८
आमलकघृत	२९
आमलकघृत की फलश्रुति	३०
प्रथम आमलकावलेह	३१
आमलकचूर्ण	,,
विडङ्गावलेह	३२
द्वितीय आमलकावलेह	३३
नागबलारसायन	३४
बलादि रसायन	३५
भल्लातकक्षीर	३६
भल्लातकक्षौद्र	३९
भल्लातकतैल	,,
भल्लातक के अन्य योग	४०
भिलावे के गुण	४१
भल्लातक के प्रयोग	,,
कफज रोगनाशक भिलावा	,,
भल्लातक का सेवन यथाविधि करें	,,
उपसंहार	४२
(१।३) रसायनाध्याय : तृतीयपाद	**४३-६०**
आमलकायस ब्राह्मरसायन	४३
आमलकायस ब्राह्मरसायन की फलश्रुति	४४
ग्राम्यजनों के लिए रसायन-निषेध	,,
केवलामलकरसायन	४५
लौहादि रसायन	४६
ऐन्द्र रसायन	४७
चार मेध्य रसायन	४८
पिप्पलीरसायन	,,
पिप्पलीवर्धमानरसायन	५०
प्रथम त्रिफलारसायन	५२
द्वितीय त्रिफलारसायन	,,
तृतीय त्रिफलारसायन	५३
चतुर्थ त्रिफलारसायन	,,
शिलाजीत के गुण	५४
भावना-द्रव्य तथा भावना देने की विधि	५५
शिलाजीत-सेवन-विधि एवं उसके लाभ	५६

विषय	पृष्ठ
काल तथा मात्रा-निर्देश	५६
शिलाजीत की उत्पत्ति	,,
सुवर्ण शिलाजतु के गुण-धर्म	५७
रजत शिलाजतु के गुण-धर्म	,,
ताम्र शिलाजतु के गुण-धर्म	,,
लौह शिलाजतु के गुण-धर्म	,,
शिलाजतु-प्रयोग-निर्देश	५८
शिलाजतु-सेवन में पथ्य	,,
कुलत्थी के निषेध में कारण	,,
शिलाजीत घोलने योग्य द्रव	५९
शिलाजीत की विशेषता	,,
उपसंहार	६०
(१।४) रसायनाध्याय : चतुर्थपाद	**६०-७६**
शालीन और यायावर ऋषियों पर ग्राम्य आहारों का प्रभाव	६०
ऋषियों को इन्द्र का उपदेश	६१
इन्द्र के उपदेश की प्रशंसा	६२
इन्द्रोक्त रसायन : प्रथम	,,
द्रोणीप्रावेशिक रसायन	६४
दिव्य ओषधि सेवन के अधिकारी	६६
मृदुवीर्य ओषधि-सेवन-निर्देश	६७
इन्द्रोक्त रसायन : द्वितीय	,,
कुटीप्रावेशिक रसायन के योग्य व्यक्ति	६९
वातातपिक रसायन के योग्य व्यक्ति	,,
रसायन-सेवन में सावधानी	,,
आचार रसायन	,,
परिस्थिति के अनुसार रसायन से लाभ	७०
चिकित्सक की पूजा का विधान	,,
अश्विनीकुमारों का चिकित्सा-कौशल	७१
अश्विनीकुमारों का सर्वत्र सम्मान	,,
ब्राह्मण आदि द्वारा उपासना	७२
यज्ञ में देवताओं का सान्निध्य	,,
सुखार्थी वैद्य की पूजा करें	,,
प्राणाचार्य-परिचय	,,
वैद्य जन्मना नहीं होता	७३
वैद्य की द्विज संज्ञा	,,
वैद्य तथा रोगी के कर्तव्य	,,
रोगी के उऋण होने का उपाय	,,
चिकित्सक का कर्तव्य	७४
आयुर्वेद के उपदेश का लक्ष्य	,,

विषय	पृष्ठ
उत्तम चिकित्सक का लक्ष्य	७४
जीविका के लिए आयुर्वेद नहीं है	,,
जीवनदान सबसे उत्तम होता है	,,
भूतदया ही चिकित्सा का उद्देश्य	७५
उपसंहार	,,
(२।१) वाजीकरणाध्याय : प्रथमपाद	**७६-८७**
वाजीकरण की आवश्यकता	७६
वाजीकरण-चिकित्सा के सम्बन्ध में सामान्य विचार	,,
स्त्री सर्वोत्तम वाजीकरण है	७८
स्त्रियों के प्रति लोक की भिन्नरुचि	७९
वाजीकरण योग्य स्त्री-परिचय	,,
सहवास के योग्य स्त्री	,,
निःसन्तान पुरुष की निन्दा	८१
सन्तानहीन की प्रकारान्तर से निन्दा	,,
सन्तानहीन का अन्य स्वरूप	,,
सन्तानयुक्त पुरुष की प्रशंसा	८२
सन्तान से लाभ	,,
वाजीकरण की आवश्यकता	,,
वाजीकरण योगों का उपदेश	८३
बृंहणी गुटिका	,,
वाजीकरण घृत	,,
वाजीकरण पिण्डरस	८४
वृष्य माहिषरस	८५
चार वृष्य रस	,,
वृष्य चटकमांस-प्रयोग	८६
वृष्य माष-प्रयोग	,,
वृष्य कुक्कुटमांस-प्रयोग	,,
वृष्य अण्डरसों का प्रयोग	,,
संशोधन के बाद वृष्ययोगों का सेवन	,,
उपसंहार	८७
(२।२) वाजीकरणाध्याय : द्वितीयपाद	**८७-९२**
अपत्यकरी षष्टिकादि गुटिका	८८
वृष्य पूपलिकादि योग	८९
अपत्यकर स्वरस	,,
वृष्य क्षीर	९०
वृष्य घृत	,,
वृष्य दधिसर-प्रयोग	९१
वृष्य षष्टिकौदन-प्रयोग	,,
वृष्य पूपलिका	९२

विषय	पृष्ठ
वाजीकरण योगों की फलश्रुति	,,
अन्य वाजीकरण भाव	,,
अध्यायगत योगों की गणना	,,
(२।३) वाजीकरणाध्याय : तृतीयपाद	**९३-९९**
वृष्य गोदुग्ध	९३
वृष्य क्षीर-प्रयोग	,,
अपत्यकर क्षीरयोग	९४
अपत्यजनन क्षीरयोग	९५
वृष्य पिप्पलीयोग	,,
वृष्य पायसयोग	९६
वृष्य पूपलिकायोग	,,
वृष्य शतावरीघृत	,,
वृष्य मधुकयोग	९७
वाजीकरणोचित आहार-विहार	,,
वाजीकरणोचित संगति	,,
वाजीकरणोचित विहार	९८
वाजीकरणोचित वातावरण	,,
उपसंहार	९९
(२।४) वाजीकरणाध्याय : चतुर्थपाद	**९९-११०**
चतुर्थ पाद की प्रस्तावना	९९
शारीरिक बल तथा संतानोत्पत्ति का सम्बन्ध	,,
बलवर्धक वृष्य योग	१००
वृष्य योगों में पूर्वकर्म	१०१
वृष्य बस्तियाँ	,,
वृष्य मांस-गुटिकाएँ	,,
वृष्य महिषरस	१०२
वृष्य घृतभृष्ट मत्स्यमांस	,,
दो वृष्य पूपलिकाएँ	१०३
वृष्य माषादि पूपलिका	,,
वृष्य योग	१०४
अपत्यकर घृत	,,
वृष्य गुटिका	१०५
वृष्योत्कारिका	,,
वृष्य द्रव्य-संकेत	,,
स्त्री-सहवास का उचित समय	,,
सहवास के पश्चात् कर्म	१०६
शुक्र की उत्पत्ति का क्रम	,,
सहवास योग्य अवस्था	,,
बाल्यावस्था में सहवास का निषेध	१०७

विषय	पृष्ठ
वृद्धावस्था में मैथुन का सहेतुक निषेध	१०७
शुक्रक्षय के कारण	,,
मैथुनशक्ति की कमी के कारण	,,
शरीर में शुक्र का स्थान	१०८
शुक्र के निकलने का प्रकार	,,
शुक्र-प्रवृत्ति के आठ कारण	१०९
सन्तानोत्पादक शुक्र के लक्षण	,,
वाजीकरण की परिभाषा	,,
चतुर्थ पाद का उपसंहार	११०
(३) ज्वरचिकित्साध्याय	**१११-२१९**
अग्निवेश का ज्वर-सम्बन्धी प्रश्न	१११
ज्वर-सम्बन्धी सन्देह	११२
ज्वर-सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर	,,
ज्वर के पर्याय	,,
ज्वर की प्रकृति क्या है ?	११३
स्वभावरूप ज्वर की प्रकृति	,,
ज्वर की प्रवृत्ति	११४
ज्वर-सम्बन्धी पौराणिक कथा	,,
ज्वर का प्रभाव	११६
ज्वर के कारण	,,
ज्वर का पूर्वरूप	,,
ज्वर का अधिष्ठान	११७
ज्वर का बल तथा काल	,,
ज्वर का आत्मलक्षण	,,
ज्वर के भेद एवं उसके लक्षण	११८
शारीरिक ज्वर एवं उसके लक्षण	१२०
मानसिक ज्वर एवं उसके लक्षण	,,
सौम्य तथा आग्नेय ज्वर	१२१
सौम्य तथा आग्नेय ज्वर का सहेतुक निर्देश	,,
अन्तर्वेग ज्वर के लक्षण	,,
बहिर्वेग ज्वर के लक्षण	१२२
प्राकृत ज्वर के लक्षण	,,
पित्त तथा कफ का कालज प्रकोप	१२३
प्राकृतिक पैत्तिक ज्वर	,,
प्राकृतिक कफज ज्वर	,,
प्राकृत ज्वर का उपसंहार	१२४
प्राकृत ज्वर का अपवाद	,,
ज्वर-हेतु स्मारक-सूत्र	१२५
साध्य ज्वर के लक्षण	,,
असाध्य ज्वर के लक्षण	,,

चरकसंहिता

'चरक-चन्द्रिका'-हिन्दीव्याख्या-विशेष वक्तव्य आदि से संवलित

व्याख्याकार

डॉ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

प्राक्कथन लेखक

डॉ. गङ्गासहाय पाण्डेय एवं डॉ. जनार्दन देशपाण्डे

सम्प्रति उपलब्ध चरक-संहिता 8 स्थानों तथा 120 अध्यायें में विभक्त है । प्रस्तुत संहिता काय-चिकित्सा का सर्वमान्य ग्रन्थ है । जैसे समस्त संस्कृत-वाङ्मय का आधार वैदिक साहित्य है, ठीक वैसे ही काय-चिकित्सा के क्षेत्र में जितना भी परवर्ती साहित्य लिखा गया है, उन सब का उपजीव्य चरक है ।

चरकसंहिता के अन्त में ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा है—**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्'** । इसका अभिप्राय यह है कि काय-चिकित्सा के सम्बन्ध में जो साहित्य व्याख्यान रूप में अथवा सूत्र रूप में इसमें उपलब्ध है, वह अन्यत्र भी प्राप्त हो सकता है, और जो इसमें नहीं हैं, वह अन्यत्र भी सुलभ नहीं है । चरक का यह डिण्डिमघोष तुलनात्मक दृष्टि से सर्वदा देखा जा सकता है ।

दूसरी विशेषता महर्षि चरक की यह रही है—**'पराधिकारे न तु विस्तरोक्तिः'** । इन्होंने अपने तन्त्र के अतिरिक्त दूसरे विषय के आचार्यों के क्षेत्र में टाँग अड़ाना पसन्द नहीं किया, अतएव उन्होंने कहा है—**'अत्र धान्वन्तरीयाणाम् अधिकारः क्रियाविधौ'** ।

इस प्रकार के आदर्श ग्रन्थ पर भट्टारहरिचन्द्र आदि अनेक स्वनामधन्य मनीषियों ने टीकाएँ लिखकर इसके सहस्यों का उद्घाटन समय-समय पर किया है ।

इसके पूर्व भी चरक की कतिपय व्याख्याएँ लिखी गयी हैं, वे विषय का बोध भी कराती हैं । चरकसंहिता की **चरक-चन्द्रिका** टीका कें रूप में लेखक का इस दिशा में यह स्तुत्य प्रयास है । इसमें यथसम्भव चरक के रहस्यमय गूढ़ स्थलों का सरस भाषा में आशय स्पष्ट किया गया है । स्थल विशेष पर पर पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी नाम भी दे दिये गये हैं । अवश्यकतानुसार प्रकरण विशेष पर आधुनिक चिकित्सा-सिद्धान्तों का तुलनात्मक दृष्टि से भी समावेश कर दिया गया है, जिससे पाठकों को विषय को समझने में सुविधा हो । साथ ही कठिन स्थलों को विशेष वक्तय तथा टिप्पणियों द्वारा प्राञ्जनल किया गया है ।

प्रथम भाग - (सूत्र-निदान-विमान-शारीर-इन्द्रियस्थान)

द्वितीय भाग - (चिकित्सा-कल्प सिद्धिस्थान)

महर्षिणा सुश्रुतेन प्रणीता

सुश्रुतसंहिता

'सुश्रुतविमर्शिनी'-हिन्दीव्याख्या विमर्शादिभिश्च समन्वितः

प्राक्कथन-लेखक
आचार्य प्रियवत शर्मा

हिन्दी व्याख्याकार
डॉ. अनन्तराम शर्मा

प्रथमो भागः (सूत्र-निदानस्थानात्मकः) * द्वितीयो भागः (शारीर-चिकित्सा-कल्पस्थानात्मकः)
तृतीयो भागः (उत्तरतन्त्रात्मक)

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी-221001
csp_naveen@yahoo.co.in
www.chaukhamba.co.in

ISBN : 978-93-81484-76-0